बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर की रिपब्लिकन पार्टी

अतीत व वर्तमान एक नजर में

''औंधे को सीधा, गुमराह को राह पर लाने की सच्चाई''

निर्वाण प्राप्त- डा0 जी0पी0 प्रशान्त

वैसे तो इधर थोड़े समय में बढ़ते हुये अम्बेडकर वाद को मोड़कर अपनी शक्ति बढ़ाने में लोग आगे से आगे बढ़–चढ़ रहे हैं, पर उनसे अम्बेडकरवाद को ज्यादा नुकशान इसलिए नहीं है कि वे बाबा साहेब की ''रिपब्लिकन पार्टी'' के नहीं है, नुकशान उनसे है जो कि रिपब्लिकन पार्टी की सही जानकारी से अनभिज्ञ, कभी इस पार्टी का कभी उस पार्टी का और कभी–कभी कई पार्टियों का अपने को पदाधिकारी घो"ात कर भावुक अम्बेडकराइट जनता को गुमराह करने के साथ ही परमपूज्य बोधिसत्व बाबा साहेब के खान–दान को भी अपनी स्वार्थ लिप्सा के लिये नहीं बख्सते।

आप जानते होगे कि भारत में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया की पृ"ठभूमि दलित व पिछड़े समाज की सामाजिक व धार्मिक क्रान्ति से पहले ही मजबूत हो चुकी थी। दलित व पिछड़े समाज के निर्गुणवादी सन्तों ने जातियों में विभाजित समाज की एकतामय प्रगति व उत्थान का रास्ता दिया है ऐसे महान सन्तों में प्रमुख है सर्वश्री सन्त कबीर साहब कोरी, रैदास साहेब– चमार, नामदेव पिछड़ी जाति, परमे"ठी जी दर्जी, नामदास– डोम, बुल्ला साहेब, तुकारम– कुर्मी, पल्टू साहेब कांद, सेनाजी– नाई, धानाजी जाट, गोराजी बकुवाजी– कुम्हार, सिंगजी– ग्वाला, नरसिंह जी– सुनार, जोगा परमानन्द तेली, सन्त घासीदास जी सतनामी, विट्ठल जी व सावंत जी– माली, चोखा मेला महार, रघुजी केवट, संत गाडगे बाबा– धोबी, इनके सिवा और भी प्रसिद्ध विद्वान सन्त हुए है लखनऊ में बौद्ध भिक्षु मदंत बोधानन्द ने मोहल्ला रिसालदार पार्क में दबे, पिछड़े समज के उत्थान के लिए एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की। बोधिसत्व बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर जब कभी लखनऊ में आये , इस विहार में अवश्यक पधारे। स्वामी अछूता नन्द ने नेतृत्व में यही से शो"ित समाज के जन जागरण कार्य की योजनां बनी।

राजनैतिक स्थितिः

लन्दन में होने वाले गोलमेज सम्मेलन (राउण्ड टेबुल कान्फ्रेंस 1930–31) से आठ व"र्ा पूर्व सन् 1922 ई0 में '' विश्व विजयी'' श्री 108 स्वामी अछूतानन्द ने दिल्ली में पधारे सम्राट् जार्ज पंचम के श्पुत्र प्रिंस ऑफ वेल्स को एक 17 सूत्री मांगपत्र प्रस्तुत किया। जिस सम्मेलन में यह मांगपत्र प्रस्तुत हुआ उसके आयोजक थे, सर्वश्री वीर रतन देवी दास

ज्ञापनः–

1. आदि हिन्दुओं (अछूतों) का पृथक से चुनाव हो तथा पृथक से प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाये।
2. अछूतों की प्रगति हेतु स्कूल– विद्यालय खोले जाये।
3. अस्पृश्यता निवारण हेतु कड़े कानून बनाये जाये।
4. शिक्षित अछूतों को शासकीय सेवाओं में लिया जाये।
5. स्थानीय संस्थाओं जैसे नगर पालिका, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ग्राम पंचायत, टाउन एरिया, नोटीफाइड ऐरिया, आदि में भी अछूत सदस्य मनोनीत किये जाये।
6. अछूतों को व्यापार एवं दुकानदारी के कार्य करने की स्वतन्त्रता दी जाये।
7. बेगार प्रथा को समूल न"ट किया जाये।
8. सवर्ण हिन्दुओं के समान ही अछूतों को सामाजिक अधिकार प्राप्त हो।
9. प्रत्येक शासकीय, अशासकीय कमेटियों में संख्या के अनुपात से प्रतिनिधित्व दिया जाये।
10. अछूत छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाये।
11. अछूत बाहुल्य ग्रामों में अछूत विद्यालय स्थापित किये जाये।
12. पुलिस तथा फौज में अछूतों को भी प्रवेश दिया जाये।
13. मजदूरी में वृद्धि की जाये।
14. ग्रामीण चौकीदार पद पर अछूत रखे जाये।
15. अछूत कृ"ाकों को परती भूमि प्रदान की जाये।

16. प्रान्तीय विधान सभाओं में अछूत भी लिये जाये।

17. उपरोक्त 16 मॉगों को देशी राज्यों में भी लागू किया जाये।

प्रिन्स आफ वेल्स ने इस ज्ञापन को इग्लैण्ड पहुंच कर अपने पिता सम्राट जार्ज पंचम के सामने प्रस्तुत किया। अछूत सभा में (दिल्ली में) जो भी सुना, जाकर बताया। इस पर लन्दन के सेक्रेट्री आफ स्टेट फार इण्डिया का भारत के वायसराय के लिये एक सख्त आदेश हुआ कि अछूतों का प्रत्येक नगर पालिका में एक–एक सदस्य रखा जाये। इसी प्रकार टाउनएरिया, नोटीफाइड एरिया, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, लेजिसलेटिव काउन्सिल आदि शासकीय संस्थाओं में एक–एक मेम्बर अछूतों का मनोनीत किया जाये व इस आदेश का कड़ाई से पालन किया जाये।

सम्भवतः इस आदेश के तहत ही लखनऊ के राय साहब राम चरन (मल्लाह) पिछड़ा वर्ग के होते हुये भी एम0एल0सी0 नामजद हुए। रायसाहब रामचरन जी ने तत्कालीन राज्य के सामने अछूतों की सुविधाओं के लिये प्रसताव रखकर 25 दिसम्बर सन् 1928 को जो आदेश करवाये, वे इस प्रकार हैः–

1. कम से कम 20 वजीफे 20 रूपये प्रतिमाह विश्वविद्यालय के अछूत छात्रों के लिए।

2. 300 वजीफे 10/– रूपया प्रतिमाह सेकेण्डरी स्कूल के अछूत छात्रों के लिए।

3. 600 वजीफे दर्ज 1 से 6 तक प्राइमरी वनक्यिूलर स्कूल के अछूत छात्रों के लिये।

4. इन सबकी देख–भाल के लिये एक सब डिप्टी इन्सपेक्टर व 2 सुपरवाइजरों की नियुक्ति हुई जो कि घूम–घूम कर प्रत्येक जिले में शिक्षा के इस कार्यक्रम की प्रगति का अवलोकन कर उसे लागू कराये। बाद में एक (विशे"ा) स्पेशल आफिसर की नियुक्ति हुई।

5. ऐसा कार्यक्रम निश्चित किया गया कि छात्रों की शिक्षा विधिवत् ठीक ढंग से चले व उसमें कोई व्यवधान उत्पन्न न हो।

6. वनक्यिूलर व सेकेण्डरी अंग्रेजी निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था।

7. सभी सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में बिना रोक टोक अछूत छात्रों की भर्ती।

इस प्रकार उत्तर प्रदेश में ''विश्व विजयी'' स्वामी अछूता नन्द के नेतृत्व में सन् 1930–31 के राउण्ड टेबुल कान्फ्रेन्स लन्दन में अछूतों क प्रतिनिधि के रूप में बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर के लिये उनके अधिकारों की पृ"ठभूमि पहले से ही तैयार हो गयी जब गॉधीजी ने इस कान्फ्रेन्स में बाबा साहेब को भारत के अछूतों का प्रतिनिधि होने से इन्कार कर दिया तो स्वमी अछूतानन्द जी ने पूरे उत्तर भारत का दौरा कर बाबा साहेब के नेतृत्व के पक्ष में इतने अधिक प्रस्ताव लन्दन की गोलमेज परि"ाद में प्रस्तुत करा दिये कि परि"ाद को स्वीकार कर लेना पड़ा कि बाबा साहेब ही भारत के अछूतों के वस्तविक प्रतिनिधि है गॉधीजी नहीं। आगे अछूतों के पृथक निर्वाचन के विरोध में किये गये गॉधी जी के कृत्यों की गाथा सभी जानते है जिसे बताने की आवश्यकता नहीं है।

जब बोधिसत्व बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर को यह सब पता चला तो उन्होंने स्वामी अछूताननद जी को अनेक–अनेक नमन का पत्र लिखते हुये उने प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने ही इन्हें '' विश्व विजयी'' स्वामी की उपाधि से विभू"ात किया।

लन्दन की गोलमेज परि"ाद में बााब साहब द्वारा रखी गयी शर्ते व पूना पैक्ट की कहानी आप सभी जानते हैं। यदि नहीं जानते है तो अभी से जान ले अन्यथा रिपब्लिकन पार्टी व रिपब्लिकन जनता के लिये आप नकारा ही साबित होगें।

<u>पूना पैक्ट के बाद</u>

सन् 1932 ई0 में गॉधी जी से पूनापैक्ट के बाद अछूतों की जबान दस साल के लिये बन्द हो गयी क्योंकि इस पैक्ट से सहमत हुए गॉधीजी व हिन्दुओं का वायदा था कि 10 व"ार्ो के अन्दर अछूतों के प्रति छुआ–छूत, भेद–भाव व उनकी सारी समस्याओं का सामाधान हो जायेगा। गांधी जी ने बड़ी चतुराई से अछूतों को ''हरिजन'' कहकर पीछा बचाने की तरकीब निकाल ली, ताकि

दुनिया समझ ले कि जिस अछूत के लिये संघ"ार्ा हो रहा था, वह अछूत अब अछूत नहीं रहा।

शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशनः

18–19 जुलाई सन् 1942 ई0 को नागपुर में आल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना हुई। शैड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन ने अनुसूचित जातियों के लिए देश के स्वतन्त्रता संग्राम के साथ ही इनकी स्वतंन्त्रता का संग्राम छेड़ दिया ऐसा इसलिए कि सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता राजनैतिक स्वतन्त्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इस संग्राम का इतिहास काग्रेस के स्तन्त्रता संग्राम से कम महत्वपूर्ण नही है। लगता है कि संग्राम को न जानने वाले पढ़े लिखें लोगों ने भी बाबा साहेब के रिपब्लिकन पार्टी व उसके इतिहास को विरोधियों की मंशा के तहत किसी दूसरे की पार्टी के बढ़ावा देने में जान भिड़ा दी बाबा साहेब ने सच ही कहा था कि इन पढ़े लिखे लोगों से मेरे उद्देश्य को आघात पहुंचेगा। यदि वे अपनी इस गलती का ऐहसास आज भी कर ले तो वास्तविकता को जानकर वे बाबा साहेब के धार्मिक मिशन बौद्ध धर्म व उनकी राजनैतिक रिपब्लिकन पार्टी ''को यदि बढ़ते देखना नहीं चाहते तो उसे न"ट करने में भी अपनी ताकत जाया नहीं करेगें।

आल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के संस्थापक बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर ने शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की ओर से भारत के भावी संविधान का मसविदा प्रस्तुत कर दिया तो इस मसविदे को देखकर बड़े–बड़े दिग्गज दंग रह गये। गॉधी जी को भी मानना पड़ा कि स्वतन्त्र भारत का संविधान बनाने की क्षमता मात्र बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर में ही है। विरोधी होते हुये भी कांग्रेस को बोधिसत्व बाबा साहेब को विधि मंत्री व संविधान निर्माता बनाना बड़ा। कास शैड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन द्वारा रखी गयी कुछ महत्वपूर्ण बाते संविधान में रख ली जाती तो अल्पसंख्यकों की समस्या सदैव के लिए सुलझ जाती व संम्प्रदायिक विवाद का हल भी निकल आता। भारत विभाजित होने के बजाय अमेरिका की भॉति ''यूनाईटेड स्टेट ऑफ इण्डिया'' बन जाता।

शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के देशव्यपी आन्दोलन से अनुसूचित जातियों को जो भी प्राप्त हो सका उसका निम्ननांकित सार इस प्रकार हैः—

जन्मसिद्ध राजनैतिक अधिकार, संसद, विधानसभा एवं स्थानीय निकायों में आरक्षण, सरकारी सेवाओं में आरक्षण, शिक्षा सम्बन्धित सुविधायें, सीलिंग से बची व पर्ती भूमि का वितरण। अस्पृश्यता कानूनी अपराध। 1948 ई0 का मिनिमम वेजेज ऐक्ट आदि।

25 अप्रैल सन् 1948 को लखनऊ की उत्तर प्रदेश शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की एक विशाल कान्फ्रेन्स में बाबा साहेब ने कहा था कि यदि उ0प्र0 के शेड्यूल्ड कास्ट व बैकवर्ड क्लास एक होकर पार्टी से लड़े तो यहॉ आसानी से अपनी सराकर बना सकते हैं आदि .....। बाबा साहेब इस पर मनन करते हुये सिख, मुस्लिम, व समाजवादी नेताओं से मिले। 13 अक्टूबर सन् 1956 ई0 को नागपुर में धर्मान्तरण के दो दिन पूर्व जैसा कि लखनऊ में कहा था शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के स्थान पर रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया बनाने की घो"ाणा कर दी। लखनऊ में जबकि शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की कान्फ्रेन्स हुई थी उन्होंने बैकवर्ड क्लास के नेताओं से कहा था कि अब भी यदि वे बैकवर्ड क्लास के लोगों को संगठित कर शैड्यूल्ड कास्ट की भॉति अपने अधिकारों के लिए आन्दोलन करें तो यह दोनों क्लास मिलकर कंधे से कंधा भिड़ाकर आसानी से एक तीसरी शक्ति के रूप में उभर कर राजनैतिक सत्ता एक पार्टी के रूप में हथिया सकते है। 30 नवम्बर सन् 1956 को जैसा कि बाबा साहेब ने घो"ाणा की थी दिल्ली में अपने निवास पर विधिवत रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया का गठन करा दिया। पार्टी के प्रथम अध्यक्ष माननीय एन0 शिवराज व महामंत्री बैरिस्टर बी0डी0 खोबरागडे हुए। इस राजनैतिक संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए समता सैनिक दल के गठन पर जोर दिया गया। बाबा साहेब ने कहा कि पार्टी का लीडर इतना महान हो कि दूर से दिखाई दे व दूसरी पार्टियों से अच्छा हो। पार्टी में पूर्ण अनुशासन हो। पार्टी के कार्यक्रम आइने की भॉति साफ हो। पार्टी देश से सामाजिक आर्थिक व शैक्षिक वि"ामता मिटाने के लिए एकता के साथ संघ"ार्ा जारी रखे (अधिक जानकारी के लिए पार्टी के

संविधान का अध्ययन करे व उसके साहित्य को पढ़े तथा चुनाव घो"णा पत्रों की जानकारी हासिल करें) पार्टी के समस्त आन्दोलन प्रदर्शन आदि यहॉ रखपाना सम्भव नहीं है।

इतना अवश्य समझ ले कि पार्टी की संविधानिक अनुशासन की महत्ता के अन्तर्गत विभाजित को संगठित, पिछड़े को उन्नतशील, अनभिज्ञ को सुविज्ञ बनाना है। निराशो में आशा बंधानी है। हीन भावना का परित्याग कर स्वाभिमान मय जीवन की प्रवृत्ति उपजानी है। जनशक्ति, धनशक्ति, साधन शक्ति, सत्ता शक्ति की वृद्धि करनी है। जो सुप्त अवस्था में है उन्हें जागृत करना व आन्दोलित करना है। राजनीतिक, शिक्षा, उद्योग, इन्डस्ट्री, कृ"ा व हर क्षेत्र में अपना अस्तित्व कायम करना है पंचायती समाज को पंचायती राज में बदलना है।

हमारी बातचीत गतिविधियॉ ऐसी हो कि पार्टी में अधिकाधिक लोग आएं। साथ ही ध्यान रखे कि अलगाववादी, हानि पहुंचाने वाले, अनुशासनहीन, छद्मवे"ाी लोगों की, जो कि यहॉ से प्रशिक्षण लेकर झट छलांग मार दूसरे खेमे में पहुंच जाते है ऐसे लोग पार्टी में न आएं। हम अपनी कारगुजारियों से ऐसा कर दिखाये कि जनता हमारे नेतृत्व पर विश्वास करे। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, दुखी, बीमारी, आदि जीवन की जरूरतों का अध्ययन करते हुये समस्याओं के सुलझाने की ओर लगे। आपलोग खासकर उत्तर प्रदेश के लोगों को ''विश्वविजयी'' स्वामी अछूतानन्द जैसा नेतृत्व पाकर आगे बढ़ने का जो अवसर मिला है, उस महान नेतृत्व की गरिमा व उत्क"ा को सदैव बढ़ावा देते रहे।

भारत की रिपब्लिकन पार्टी

इसमें कोई शक नही है कि पार्टी ने शुरूआती दौर में बहुत बड़े काम किये। रिपब्लिकन पार्टी पूरे तौर पर आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, मध्य प्रदेश , महारा"ट्र पंजाब, दिल्ली , उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, केरल, मैसूर, तमिलनाडु आदि में व्यापक रूप से फैलकर स्टेट पार्टी से रा"ट्रीय पार्टी की दिशा अपनाने लगे। 1 अक्टूबर सन्

1964 को दिल्ली के संसद भवन के सामने पार्टी का विशाल प्रदर्शन हुआ जिसमें पूरे भारत की ओर से लाखों प्रदर्शनकारी जमा हुये।

पार्टी ने तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री को जो ज्ञापन दिया उसकी संक्षिप्त मांगे इस प्रकार है।

1. भारतीय संविधान के निर्माता बोधिसत्व बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर का चित्र पार्लियामेन्ट के सेन्ट्रल हाल में लगाया जाये (यह मांग पार्टी तब तक करती रही जब तक कि चित्र नहीं लग गया)।
2. जो भूमि को अपने हाथों हल जोतकर अन्न पैदा करते आये है उन्हीं का रा"ट्र की भूमि पर अधिकार हो।
3. बेकार और पर्ती भूमि , भूमिहीन खेतिहर मजदूरों में वितरित की जाये।
4. खाने–पीने की चीजों का ठीक–ठाक वितरण और उन्नतिमय सुधार किया जाये।
5. मलिन बस्तियों में रहने वालों का उन्नतिमय सुधार किया जाये।
6. कम वेतन वाले श्रेणी के मजदूरों के हित में मिनमन वेजेज एक्ट 1948 को पूर्णतया लागू किया जाये।
7. बौद्ध धर्म गृहण करने वाले अनुसूचित जाति के लोगों को संविधानिक सुविधायें प्रदान की जाये।
8. शो"ित वर्गा का उत्पीड़न (अत्याचार– सताना) शीघ्र से शीघ्र रोका जाये।
9. अनुसूचित जातियों के प्रति अस्पृश्यत अपराध अधिनियम के अनुसार न्याय किया जाये।
10. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के आरक्षण को शीघ्र से शीघ्र 1970 तक लागू किया जाये।

उक्त ज्ञापन पार्टी के रा"ट्रीय अध्यक्ष सम्माननीय राव बहादुर एन0 शिवराज के द्वारा दिया जाना था किन्तु 29 सितम्बर , सन् 1964 ई0 को नई दिल्ली में उनका देहावसान हो गया। उनका शव उनके निवास स्थान मद्रास हवाई जहाज से भेज दिया गया।

इसके बाद पार्टी के रा"ट्रीय अध्यक्ष दादा साहेब बी0के0 गायकवाड़ हुये। अब तक पार्टी के रा"ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर काम करते हुये महान भाव जब रा"ट्रीय अध्यक्ष नहीं चुने गये तो बिगड़ कर काग्रेस की गोद में चले गये। इसका उन्हें अच्छा इनाम भी मिला। बस यही से नेतृत्व की स्वार्थ लिप्सा में पार्टी का दम तोड़ दिया। क्या पता था कि उत्तर प्रदेश का माना हुआ रिपब्लिकन लीडर अपने लिये अपनी ही पार्टी को कभी भी न पनपने लायक स्थिति में धकेलकर छोड़ देगा। 2 अक्टूबर सन् 1964 को उत्तर प्रदेश में रिपब्लिकन पार्टी तीन हिस्सों में विभाजित कर दी गयी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, केन्द्रीय उत्तर प्रदेश व पूर्वी उत्तर प्रदेश। तीनों प्रदेशों में ऐसे पदाधिकारी मनोनीत किये गये जो कि ऊपर के इशारे से कभी कुछ कर सके। नतीजा यह हुआ कि अगले चुनाव में एक केन्द्रीय उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष इस पुश्तिका के लेखक को छोड़कर सभी कांग्रेस के समर्थक हो गये। रिपब्लिकन पार्टी को मिटाने की कारगुजारी में कांग्रेस स्वयं ध्वस्त हो गयी। यदि रिपब्लिकन पार्टी पुनः जागरूक हो गयी तो इसे मिटाने वालों का वही हस्र हो सकता है जो कि कांग्रेस का हो चुका है। जिस रिपब्लिकन पार्टी ने महारा"ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश , कर्नाटक, गुजरात, उ0प्र0 से अपने एम0पी0 जिताये वह पार्टी अपने नव जागरण में अपनी संख्या की बढ़ोत्तरी अवश्य करेगी।

उत्तर प्रदेश की रिपब्लिकन पार्टी

सन् 1962 के आम चुनाव में उत्तर प्रदेश की रिपब्लिकन पार्टी ने तीन एम0पी0 व आठ विधायक जिताये। इसके सिवा हाथरस क्षेत्र से जीते हुये एक एम0पी0 चुनाव पिटीशन हार गये। सन् 1967 में महारा"ट्र की रिपब्लिकन पार्टी ने चुनाव में 12 प्रतिशत वोट हासिल करके पार्टी को स्टेट पार्टी का दर्जा दिलाया। इस बार आने वाले इलेक्शन में उत्तर प्रदेश पार्टी के सम्मान की रक्षा करते हुये आवश्यता से भी अधिक मत प्राप्त कर दिखाया। उत्तर प्रदेश में रिपब्लिकन पार्टी ने एक बार संविद सरकार में भागीदारी की, जिसमें दो मुस्लिम डिप्टी मिनिस्टर बनाये व उर्दू जबान के मामले में हाऊस में अपना मत रखा। पार्टी के अखिल भारतीय व प्रदेशीय

कितने ही अधिवेशन हुये जिनमें कुछ इस प्रकार हैं। 03.12.1963 को कानपुर में पार्टी का विशाल जुलूस निकला व सभा हुई। 6–7 अगस्त 1966 को पुनः कानपुर के फूलबाग पार्क में पार्टी की विशाल कन्फ्रन्स हुई। ज्ञात हो कि इसके काफी पहले ही कानपुर की जनता बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर का शानदार स्वागत कर चुकी थी। 27, 28 अगस्त, 1973 को अलीगढ़ में पार्टी की आल इण्डिया कान्फ्रेन्स हुई व विशाल जुलूस निकला। वैसे पार्टी का रा"ट्रीय अधिवेशन 29, 30 अप्रैल, 1966 को नई दिल्ली में भी हुआ। उ0प्र0 के बुलन्द शहर व जौनपुर में पार्टी के शानदार राज्य अधिवेशन हुये। सन् 1974 के आम चुनाव में पार्टी के जीते हुये चार विधायक पार्टी के लिये धोखोबाज सिद्ध हुये। उन्होनें 26 मई सन् 1974 को समाचार पत्रों में बयान दे दिया कि वे विधानसभा के सदन में काग्रेस पार्टी के सहयोगी के रूम में बैठेगें। इनकी इस तिकड़म से रिपब्लिकन जनता में काफी असंतो"ा हुआ और पार्टी का कारवा धीरे–धीरे आहिस्ता पड़ गया।

सन् 1967 के आम चुनाव में उ0प्र0 की रिपब्लिकन पार्टी ने टाण्डा लोकसभा की एक सीट जीती व 9 विधानसभा की सीटे जीती। किन्तु सन् 1974 की उक्त घटना से पार्टी के लोगों में निराशा छा गयी और उसे ऐसे प्रतिनिधियों पर से विश्वास उठ गया। दूसरी ओर दक्षिण भारत में पार्टी की ऐसी गुटबन्दी हुई कि उत्तर प्रदेश भी इस गुटबन्दी की शिकार हुये बिना बच न सका। यहॉ तक कि आर0पी0आई0 के नाम पर जनता को कांग्रेस के समर्थन में ऐसा भ्रमित किया गया कि कानपुर के एक सज्जन तो कांग्रेस का टिकट पाने तक अपने को आर0पी0आई0 का पदाधिकारी ही चिल्लाते रहे। उन्हीं की नकल पर उत्तर प्रदेश के कुछ लोग आज भी चल रहे है। जिनका कि मूल आर0पी0आई0 से कोई लेना देना नहीं है। उत्तर प्रदेश की स्थिति अब काफी हद कि साफ हो चुकी है। दिनांक 16.10.1995 के पार्टी के लखनऊ सम्मेलन के बाद बुद्धजीवी कार्यकर्ता बहुत ही समझदारी के साथ उत्तर प्रदेश को एक संगठन में लाने के लिए उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी में एकजुट हो रहे थे क्योंकि उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी की रा"ट्रीय एकता में पहल की कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उत्तर प्रदेश के सामने एक

अहम सवाल यह है कि यदि कोई एक पार्टी होती तो वह उसके नेतृत्व को स्वीकार कर लेता किन्तु निम्ननांकित स्थिति देखने के बाद उसे विवश होकर उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी के ही मजबूत करने में लगना पड़ रहा है। जानकारी के लिए निर्वाचन आयोग भारत द्वारा अमान्यता प्राप्त रजिस्ट्रीकृत रिपब्लिकन दलों की स्थिति इस प्रकार है।

1– अम्बेडकर रिपब्लिकन पार्टी

2– भारतीय रिपब्लिकन पक्ष

3– महारा"ट्र रिपब्लिकन पार्टी

4–नेशनल रिपब्लिकन पार्टी

5– रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया

6– रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया (खोबरागड़े)

7– रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया (बालकृ"णन

8–रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया (काम्बले)

9– रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया (ए)

10– रिपब्लिकन प्रेसी डियम पार्टी आफ इण्डिया

11– यूनाइटेड रिपब्लिकन पार्टी

12– उत्त प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी

उत्तर प्रदेश ने उक्त गुटबन्द का अन्त न होते देख समस्त भारत के लिये एक ही नाम '' भारतीय रिपब्लकन पार्टी'' के रजिस्टर्ड कराने का आवेदन निर्वाचन आयोग भारत से किया। आयोग ने रजिस्ट्रेशन हेतु प्रमाणों का निरीक्षण कर '' भारतीय रिपब्लिकन पार्टी'' के पंजीकृत होने की घो"णा कर दी । साथ ही एक और अन्य दल रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया (गवई) घो"ित किया तथा अन्य जैसा कि उक्त है किन्तु आर0पी0आई0 गवई पुनः आर0पी0आई0 में परिवर्तित हो गया। दूसरी ओर '' भारतीय रिपब्लिकन पार्टी'' नाम के रजिस्ट्रेशन पर किसने, कब और क्या आपत्ति की? इस उधेड़बुन में न जाकर इतना ही समझ लें कि निम्नांकित आदेश के अनुसार हमें किस परिस्थिति में उत्तर प्रदेदश रिपब्लिकन पार्टी नाम स्वीकृत करना पड़ा। अवलोकनार्थ निर्वाचन आयोग भारत का निर्णय प्रस्तुत हैः–

भारत निर्वाचन आयोग अधिसूचना

Hindustan Times: 23.09.89, Page: 9

22 Parties registered with EC.

HT Correspondent.

NEW DELHI, Sept. 22.

The Election Commission has registered 22 political parties under section 29 (A) of the people Representation Act to enable them to contest elections.

Existing political parties were asked to apply afresh for registration before august 14 New associations and political parties, however, have been given a month's time to apply.

Parties who have been registered afresh include the communist Party of India, the Communist party of India (Marxist), the Bharatiya JanataParty, the Congress-S and the Congess-I. They mintain their status as registered National Political parties with the resereved symobls.

other State parties and registered recognised parties include the DMK, Sikkim Sangram partishad, the Asom Gana Parishad, The RepublicanParty of India (Khobargade), the RPI (Kamble) and the Republic Party of India (Gavai) and the Bharatiya Republic Party.

खण्ड 3/111/के असाधारण अशोक रोड, नई दिल्ली
अंक में तत्काल प्रकाशनार्थ तरीख 23 अक्टूबर, 1989
1 कार्तिक, 1911 (शक्)

....

सारणी–

....

1	2
अमान्यता प्राप्त रजिस्ट्रीकृत/ रजिस्ट्रीकृत होने वाले राजनैतिक दलों के नाम।	मुख्यालय का पता
56 भारतीय रिपब्लिकन पार्टी	

....

सरकारी गजट, उत्तर प्रदेश

असाधारण

लखनऊ, शुक्रसार, 27 अक्टूबर सन् 1989
कार्तिक 5, 1911 शक् संवत

....

<u>सारणी–ШШ</u>

....

1	2
अमान्यता प्राप्त रजिस्ट्रीकृत/ रजिस्ट्रीकृत होने वाले राजनैतिक दलों के नाम।	मुख्यालय का पता
56 भारतीय रिपब्लिकन पार्टी	552/2 राजेन्द्र नगर, दूसरा मार्ग, लखनऊ, पिन– 226004

....

उक्त निर्देश व गजट के बाद भारतीय रिपब्लिकन पार्टी को उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी होने के निर्देश

.....

भारत निर्वाचन आयोग

भारत के राजपत्र , भाग–2 नई दिल्ली

खण्ड 3/111/के असाधारण तारीख 15 नवम्बर, 1989

अंक में तत्काल प्रकाशनार्थ कार्तिक 24, 111 (शक्)

.....

सं0 56/89 भारत के राजपत्र, असाधारण भाग–2 खण्ड 3/111/ में प्रकाशित निर्वाचन आयोग की तारीख 23 अक्टूबर 1989 की अधिसूचना सं0– 56/89 के हिन्दी रूपान्तरण में सारणी 3 के स्तम्भ 2 में क्रम संख्या– 56 के सामने ''भारतीय रिपब्लिकन पार्टी'' के शब्दों के स्थान पर '' उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी'' शब्द रखे जाएगे और स्तम्भ 2 के अधीन 552/2 राजेन्द्र नगर दूसरा (11) मार्ग, लखनऊ पिन 226004 शब्द अंक और अक्षर जोड़े जाएगें।

आदेश से
ह0
के0पी0जी0कुट्टी
सचिव

उक्त जानकारी से स्प"ट हो गया कि उत्तर प्रदेश पहले भी सम्पूर्ण भारत के लिये एक ही रिपब्लिकन पार्टी चाहता था और आज भी। किन्तु जब उसे उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी'' नाम मिल गया तो उसने सर्व प्रथम उत्तर प्रदेश पार्टी की एकीकृत एक मजबूत इकाई बनाने का संकल्प लिया। हालांकि यह पार्टी आल इण्डिया स्तर पर पंजीकृत है, पर हमने गुटबन्दी के अखाड़े में न पड़ अपने (उ0प्र0) को मजबूत करने की दिशा अपनाई हमने बोधसत्व बाबा साहेब के विचारों के नेतृत्व का सहारा लिया। यदि अपने को आल इण्डिया रिपब्लिकन पार्टी के पदाधिकारी बनने क दम मरने वालों ने निजी स्वार्थ–लिप्सा की आड़ में ऐसी गुटबन्दी न की होती तो पार्टी का यह

कारवां क्यों बिखरता? मौके की ताक में बैठे किसी व्यक्ति ने पार्टी का चुनाव निशान ''हाथी'', नीला झण्डा, नीला बैनर, जय भीम का नारा लगाकर जनता में ऐसा घनघोर प्रचार कर दिया कि बाबा साहेब की रिपब्लिकन पार्टी मर चुकी है अब सब उसी के साथ जाओ। इसका प्रभाव यह पड़ा कि रिपब्लिकन पार्टी उत्तर प्रदेश में काफी कमजोर हे गयी उसकी जोती, बोई तैयार फसल दूसरों ने काट ली किन्तु बाबा साहेब के नाम पर बारगनिग का रहस्य, कभी इस पार्टी में कभी उस पार्टी में खुलने पर अम्बेडकराइट जनता की ऑखें खुल गयी। उसमें पुनः रिपब्लिकन पार्टी की भावना जगी और सब इकट्ठे होने लगे।

हमें प्रशन्नता है कि दिनांक 16.10.1995 को लखनऊ ममें हुये पार्टी के एकता सम्मेलन की ओर लगभग सभी रजिस्ट्रीकृत रिपब्लिकन दलों के नेताओं का ध्यान आकर्”ात हो चुका है। उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी ने एकता के प्रयास में अपना कर्तब्य पूरा कर दिया। अब पार्टी अपने प्रदेश संगठन को मजबूत करने में ही अपनी ताकत लगायेगी। उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी का प्रयास है कि वह पूर्व की भॉति ही उसे और भी आगे बढ़े और मजबूत करें। सिद्धान्तों की लड़ाई में अधिकारों की प्राप्ति के लिये एक मंत्र, एक फण्डा, एक नेतृत्व में उसके कार्यकर्ता आस्थावान हो। देश व प्रदेश की अन्दरूनी और आन्तरिक स्वतंत्रता, बंधुता के लिये अन्याय, असमानता, भ्र”टाचार, दासत्व और अंध विश्वास आदि के विरूद्ध संघ”ार्रत हों। देश उत्थान के निमित्त नव जागरण, नव चेतना और नव क्रान्ति का संदेश लेकर भारत के दबे, पिछड़े, कमजोर, अल्पसंख्यक एक होकर अपनी शक्ति को सुदृढ़ बनाये। राजनैतिक, साामाजिक, आर्थिक शो”ाण से मुक्त समाज की रचना में जुटे। धर्मचक्रयुक्त नीले झण्डे को राज्य के कोने–कोने में फहराते हुये पार्टी का सन्देश घर–घर में पहुंचा दे। लोकसभा व विधानसभा के निर्वाचन तथा स्थानीय निकायों के निर्वाचन में अपना प्रतिनिधित्व पहुंचा कर शक्ति का प्रदर्शन करें। अपनी शक्ति को इस हद तक आगे बढ़ाये कि पार्टी हर हालत में स्टेट पार्टी का दर्जा प्राप्त कर

रा"ट्रीय पार्टी होने की दिशा ममें आगे बढ़े तथा इसका चुनाव चिन्ह हमेशा के लिये सुरक्षित हो जाये।

सादर, सप्रेम जयभीम के साथ,

आपका
(जी0पी0 प्रशान्त)
गया प्रसाद प्रशान्त
552/2, राजेन्द्रनगर, लखनऊ

पिन– 226004